गुम होता बचपन

राजीव कुमार*

मासूमियत से वंचित हो रहे बच्चों को समर्पित ...

नन्हा-सा बच्चा बड़ा-सा बस्ता,
लादे जाता पीठ पर!
हाथ में बोतल, आँखों पर चश्मा,
स्कूल से ट्यूशन, ट्यूशन से घर
होमवर्क करे रातभर!

सपने में मम्मी की डाँट,मैडम की छि-छि
सहपाठी चिढ़ाते, हँसते ही-ही!
न ठीक से खाना, न ठीक से सोना
न नानी के घर जाना है!
छुट्टियों में न मौज़ मस्ती, न त्योहारों में उधम मचाना है
बारहों महीने एक ही रट, प्रथम हमको आना है!

प्रगति नाम का दानव लील गया है बचपन को
जो ब्लड प्रैशर हुआ करता था वृद्धों को,
अब होने लगा है नन्हों को!
लोगों अब तो सँभल भी जाओ,
बच्चों को बच्चा रहने दो, रेस का घोड़ा मत बनने दो!

**हिंदी शिक्षक,* दून पब्लिक स्कूल, बेगूसराय, बिहार

04-08-2017 PM 12:36:12